अनुक्रमणिका

आभार **03-04**

भूमिका **05-14**

प्रथम-अध्याय : महात्मा गांधी जीवन एक परिचय **15-32**

1.1 गांधीजी का जन्म

1.2 इंग्लैंड में अध्ययन

1.3 गांधीजी दक्षिण अफ्रीका

1.4 गांधी युग आरंभ

1.4.1 खिलाफत आंदोलन

1.4.2 असहयोग आंदोलन

1.4.3 स्वराज्य और नमक सत्याग्रह

1.5 गांधीजी इर्विन समझौता

1.6 कम्युनल एवार्ड और हरिजन कार्य

1.7 सांप्रदायिक प्रश्न और द्वितीय महायुद्ध

1.8 सूर्य को अंतिम प्रणाम

1.8.1 भारत छोड़ो आंदोलन

1.8.2 विभाजित स्वाधीनता का आगमन

1.8.3 गांधीजी की हत्या

द्वितीय-अध्याय : नेल्सन मंडेला का जीवन परिचय **33-46**

2.1 नेल्सन मंडेला का जन्म

2.2 नेल्सन का बचपन

2.3 नेल्सन की शिक्षा

2.4 विवाह

2.5 नेल्सन मंडेला का राजकीय जीवन

2.5.1 लोकप्रियता और कांग्रेस

2.5.2 अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस और नेल्सन

2.6 जेल और नेल्सन

2.7 दक्षिणी अफ्रीका के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति

2.8 नेल्सन मंडेला का निधन

तृतीय-अध्याय : महात्मा गांधी की विचारधारा **47-75**

3.1 पारिवारिक वातावरण का प्रभाव

3.2 बंधुत्व के उपासक

3.3 उपास्य आदर्श
3.3.1 ईश्वर एवं सत्य की विवेचना
3.3.2 अहिंसा
3.4 सत्याग्रह की विवेचना
3.5 धर्म के प्रति दृष्टिकोण
3.6 अहिंसक साधनों के विभिन्न रूप
3.7 रचनात्मक कार्यक्रम
3.8 गांधी जी के अर्थव्यवस्था के बारे में विचार
3.9 गांधीजी के राजनीतिक विचार
3.10 गांधी एवं समाज
3.11 गांधी के सर्वोदय संबंधी विचार
3.12 ट्रस्टीशिप (संरक्षकता)

चतुर्थ-अध्याय : नेल्सन मंडेला की विचारधारा **76-93**

4.1 नेल्सन मंडेला का प्रभाव
4.2 नेल्सन और मार्क्सवादी प्रेरणा
4.3 अछूतपन के अनुभव
4.4 नेल्सन मंडेला के सामाजिक विचार
4.5 मंडेला का राजकीय जीवन और उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता
4.6 बाल अधिकारों के रक्षक
4.7 मंडेला का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण
4.8 नेल्सन मंडेला एवं अर्थव्यवस्था
4.9 विश्व के महानतम सत्याग्रही नेल्सन मंडेला

पंचम-अध्याय : गांधी एवं मंडेला की विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन **94-107**

5.1 अहिंसात्मक दृष्टिकोण
5.2 सामाजिक विचारधारा
5.3 आर्थिक विचारधारा
5.4 राजनीतिक विचारधारा

षष्ठम-अध्याय **108-115**

उपसंहार

परिशिष्ट **116-119**

संदर्भ ग्रंथसूची **120-124**

भूमिका

विश्व संस्कृति एवं परंपरा को परिवर्तित करने वाले उनके महान सपूत महात्मा गांधी एवंनेल्सन मंडेला को एक व्यावहारिक, दार्शनिक और राजनीतिज्ञ के रूप में विश्व का जन-जन जानता है। मनुष्यता के विकास का प्रश्न है तो गांधी और मंडेला को उपेक्षित नहीं किया जा सकता।

प्रस्तुत शोध में गांधीजी एवं नेल्सन मंडेला की विचारधारा और उनके तुलनात्मक अध्ययन के जरिए यह देखा-समझा जाता है किस तरह इन दोनों महापुरुषों ने विश्व में शांति और समानता की स्थापना हेतु अपने जीवन तक को दांव पर लगा दिया था।

समाज में व्याप्त सनातन सामाजिक असमानता के विरोध में खड़े होने वाले यह दोनों महापुरुष रक्तहीन क्रांति के महान योद्धा हैं। एक ओर विश्व में सत्य, अहिंसा और अध्यात्मिक शांति के अग्रदूत महात्मा गांधी तो दूसरी ओर दक्षिण अफ्रीका के मुक्तिदाता और मानव समाज के लिए संघर्ष की विश्वस्तरीय पहचान नेल्सन मंडेला।

इन दोनों महानायकों के विचारों पर चलकर एक ऐसे विश्व की स्थापना की जा सकती है जिसमें रहने वाला प्रत्येक प्राणी अपने आप को सुरक्षित समझते हुए विश्व कल्याण की कामना से परिपूर्ण हो। हजारों सदियों में भी ऐसे महामानव जन्म नहीं लेते।

भारत एवं दक्षिण अफ्रीका ने कानूनी तौर पर समता, स्वतंत्रता और बंधुता को स्वीकार किया है किंतु समाज में व्याप्त सनातन सामाजिक विषमताएं आज भी निहित हैं। भारत में अछूतपन का दंश आज भी गरीबी की शरण में पल रहा है, वहीं दूसरी ओर अफ्रीका में काफी संख्या में जनजातियां जंगली जीवन जी रही हैं।

आज गांधीजी और मंडेला हमारे साथ नहीं है। तत्कालीन राजनीति बदल गई है। राजनेताओं ने सौदेबाजी की राजनीति को अपना अंतिम लक्ष्य मान लिया है। राजतंत्र और अर्थतंत्र दोनों से बू आ रही है। हर रोज डरावना सच लेकर जीना पड़ रहा है। ऐसे में गांधीजी और मंडेला के विचार व्यक्ति को प्रेरणा प्रदान कर जीने की नई आशा जगाते हैं।

औपनिवेशिक इतिहास की वजह से भारत का दक्षिण अफ्रीका के साथ सदियों पुराना रिश्ता रहा है। उन्नीसवीं सदी में भारतीय मजदूर दक्षिण अफ्रीका पहुंचे, तो काम करने के अलावा उन्हें कुली कह कर पुकारा जाने लगा, उनके पास बहुत सीमित अधिकार थे। लगभग 50 साल के बाद महात्मा गांधी ने इसके खिलाफ आवाज उठाई थी।

दूसरी तरफ अफ्रीका में नीग्रो के साथ अपमानजनक सलूक होता रहा। वहां अश्वेतों और भारतीय मूल के लोगों के साथ अन्याय हो रहा था। इसके खिलाफ खिलाफ 20वीं सदी के दूसरे हिस्से में नेल्सन मंडेला ने आवाज उठाई। अपने प्रारंभिक जीवन में हिंसा के पक्षधर रहे मंडेला बाद में अहिंसात्मक लोकतांत्रिक विचारधारा पर चल पड़े। रंगभेद के खिलाफ आवाज उठाई। रंगभेद के खिलाफ आवाज उठाने वालों में गांधी के बाद अगर किसी का नाम सहज में आता है तो वह है नेल्सन मंडेला।

सत्याग्रह शुरू होने के 100 साल बाद 2007 में नई दिल्ली में हुए सम्मेलन में अपने वीडियो संदेश में मंडेला ने कहा, 'दक्षिण अफ्रीका के शांतिपूर्ण बदलाव में गांधी की विचारधारा का योगदान छोटा नहीं है। उनके सिद्धांतों के बल पर ही दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की घृणित नीति के कारण जो समाज में गहरा भेदभाव था, वह खत्म हो सका।'' मेरा पहला अध्याय महात्मा गांधी का जीवन-एक परिचय है।

इस अध्याय में गांधीजी के जीवन और निरंतर सत्य के आचरण में लगी हुई आत्मा की अखंड यात्रा का वर्णन किया गया है। दुनिया में ऐसे कम ही व्यक्ति हुए हैं जो सत्य पर अड़े रहकर भी अल्प अवधि में विभिन्न वर्गों एवं समूहों, जातियों एवं धर्मों तथा स्तरों के व्यक्तियों को इतना चमत्कृत एवं अभिभूत कर दें। इंग्लैंड में अध्ययन के बाद कर्मवीर गांधी का दक्षिण अफ्रीका में जाने से लेकर सत्याग्रह और एक कर्मयोगी सामाजिक कार्यकर्ता बनने के सफर में समाज को कुरीतियों, रंगभेद, वैमनस्य, अमानवीय व्यवस्था जिससे दक्षिण अफ्रीका के अप्रवासी भारतीय गुजर रहे थे- उसके लिए गांधीजी ने अन्याय का विरोध करने का सुरूचिपूर्ण एवं शांतिपरक मार्ग आविष्कृत किया। भारत लौटने पर उनका 'सत्याग्रह' जिस वीरता को समर्पित रहा, उसमें किसानों, मजदूरों, स्त्रियों और हर वर्ग, जाति, धर्म, संप्रदाय के लोगों की सहभागिता ने विश्वभर में नए-नए मूल्यों के सहारे आंदोलित इतिहास को नया स्वरूप दिया।

गांधीजी ने असहयोग और सविनय अवज्ञा के रूप में जिस सत्याग्रह को स्वीकारा, उसमें कहीं भी और कभी भी न कटुता थी और न प्रतिकार और प्रतिशोध की भावना थी। गांधीजी इसी मानसिकता के साथ दीर्घगामी यशस्विता के बोधक बने।

गांधीजी के जीवनकाल में 'सत्याग्रह' की कसौटी पर 'चौरी चौरा', 'जलियावाला बाग हत्याकांड', 'सांप्रदायिक परिनियम', 'इर्विन पैक्ट', 'गोलमेज परिषद', 'देश विभाजन' जैसे घनघोर निराशा के प्रसंग आए लेकिन गांधीजी का सत्य न कमजोर पड़ा और न दिशा भ्रमित हुआ। हिंदू-मुस्लिम एकता को स्थापित करने एवं धार्मिक उन्माद से व्याप्त हिंसा को रोकने हेतु उन्होंने अपने प्राणों तक को दांव पर लगाया। 'सत्याग्रह' को एक विशाल अस्त्र के रूप में अपनाकर उन्होंने एक ऐसी शक्ति, जिसका सूरज कभी डूबता न था अर्थात ब्रिटेन की

साम्राज्यवादी शक्ति को भी नतमस्तक होने पर विवश पर दिया। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन के बाद लाखों बेकसूर हिंदू-मुसलमान सांप्रदायिकता को बलिदेवी पर चढ़ा दिए गए।

इस बंटवारे का समापन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बलिदान से हुआ। इस अध्ययन में गांधी से महात्मा बनने की उनकी चेष्टाओं को बारीकी से देखा गया। गांधीजी को महामानव के रूप में विश्वव्यापी स्वीकार्यता जीवन काल में ही प्राप्त हो गई थी। उनके महाप्रयाण पर अलबर्ट आइंसटाइन ने कहा था ''आने वाली पीढ़ियां यह कदाचित ही विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस वाला कोई ऐसा व्यक्ति कभी इस धरती पर चला था।''

मेरा दूसरा अध्याय नेल्सन मंडेला का जीवन-एक परिचय है।

इस अध्याय में नेल्सन मंडेला के जीवन के अविरत संघर्ष की महागाथा का वर्णन है। अध्ययन में मंडेला के कबीलाई चरवाहा जीवन से उनके देश के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति बनने तक की यात्रा का विश्लेषण है।

मंडेला का जीवन उनके शक्ति, साहस और पुरुषार्थ, आत्मोसर्ग तथा सहनशक्ति की जननी है। वे अश्वेत मिशनरी स्कूल में पढ़े थे। श्वेतों के अत्याचार-तंत्र ने अश्वेतों पर इतना कहर ढाया कि रक्षा में अश्वेतों के अंदर विरोध शक्ति का जागरण हुआ। इससे आज़ादी का मूल्य पैदा हुआ।

मंडेला अपनी यात्रा जीवन में एक श्रेष्ठ वकील बनना चाहते थे लेकिन अछूतपन के दंश ने उनके मन को उद्वेलित किया और वह इस संघर्ष इसके सहभागी हुए। उनकी मौलिक दक्षता, मौलिक योग्यता और प्रभावशाली वाककुशलता ने उन्हें दक्षिण अफ्रीका की आज़ादी का प्रेरणा स्त्रोत बना दिया। मंडेला के पास न धन और न हथियार, केवल विचार और जनशक्ति थी। जनशक्ति भी ऐसी जो प्रायः अशिक्षित और शक्तिहीन थी। विश्व राजनीति में इतनी तकलीफें, अत्याचार और इतना दमन किसी सत्याग्रही को नहीं सहना पड़ा जितना मंडेला को सहना पड़ा। उनकी अपनी माता और बेटे के मृत्यु संस्कार में जाने तक की अनुमति उन्हें प्रदान नहीं की गई।

मंडेला को 27 वर्ष की जेल यातनाओं में पत्थर की खदानों में पत्थर तोड़ने पड़े और चूने की खदानों में से चूना निकालना पड़ा लेकिन वह डिगे नहीं अचल खड़े रहे। सीमित आज़ादी के कई प्रस्तावों को उन्होंने नामंजूर किया क्योंकि उनका एकमात्र लक्ष्य था देश की संपूर्ण आज़ादी। देश की स्वतंत्रता के बाद मंडेला प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति चुने गए उन्होंने देश में नस्लभेद रहित समानता के लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना की। त्याग और संघर्ष और मानवता के प्रति अगाध प्रेम ने मंडेला को एक साधारण नागरिक से असाधारण नायक बना दिया।

तीसरा अध्याय महात्मा गांधी की विचारधारा का अध्ययन है।

इस अध्ययन में गांधीजी की विचारधारा में मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष विपक्ष व क्षेत्र का गहराई से चिंतन और मनन मिलता है जो मनुष्य को महान बना सकता है। पशुप्रवृत्ति से दिव्यता को और मनुष्य को मनुष्यता की ओर विकसित करता है। महात्मा गांधी के विचार आज के आधुनिक युग में भी अत्यधिक प्रासंगिक है। इस अध्याय में गांधीजी के सत्य और अहिंसा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तन की दिशा में उनका क्या महत्व है। सत्याग्रह को शांतिपूर्ण अस्त्र के रूप में परिभाषित करने का प्रयत्न किया गया है। गांधीजी के विचारों से बड़ी से बड़ी समस्या को अहिंसात्मक सत्याग्रह के माध्यम से सहजता से हल किया जा सकता है। वास्तविकता में गांधीजी का अंतर्मन धर्म एवं दर्शन से संस्कारित था। उन पर भगवत गीता और टॉलस्टाय के अहिंसक सिद्धांतों का गहरा असर पड़ा था। उनका नैतिक परिप्रेक्ष्य ईश्वर और सत्य की वंदना करके मुखरित हुआ।

मानव प्रकृति के विभिन्न रूपों को उजागर करते हुए ईश्वर, आत्मजगत, कर्मवाद, नैतिकता, धर्म, हृदय परिवर्तन, उपवास, मौन एवं प्रार्थना, ब्रह्मचर्य और सादगी आदि विषय में उनके विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

गांधीजी द्वारा सामाजिक परिवर्तन के पहरूए के रूप में कार्य करते हुए सांप्रदायिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, स्वरोजगार प्रशिक्षण युक्त शिक्षा, स्त्री मुक्ति एवं राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार आदि रचनात्मक कार्यक्रम देश को अमूल्य देन है।

गांधीजी समाज के प्रत्येक व्यक्ति का हित चाहते हैं। गांधीजी ने आर्थिक क्षेत्र में अपरिग्रह के विचारों का समर्थन किया है। उन्होंने स्वदेशी का आग्रह और कुटीर उद्योग का समर्थन किया। उनका लक्ष्य 'सर्वोदय' है, वह समाज के सभी अंगों का उत्थान चाहते हैं। गांधीजी का विचार-दर्शन व्यवहार और सिद्धांत का अनूठा समन्वय है।

गांधीजी की राजनीति धार्मिकता से प्रेरित है। वह राजनीति को मानवता की सेवा का साधन मानते हैं। गांधीजी 'रामराज्य' की आदर्श व्यवस्था का प्रतिपादन करते हैं। समाज सुधार उनका प्रथम लक्ष्य रहा है। सर्वजन हितार्थ को आवश्यक मान राजनैतिक जीवन में उन्होंने मनुष्य के अधिकारों पर बल दिया है। गांधीजी के संरक्षकता के सिद्धांत के मूल में उनका आध्यात्मिक समाजवाद-मुखरित होता है।

गांधीजी के विचारों का संसार बेहद विस्तृत और गहन है। मौन को अपनी सबसे बड़ी ताकत मानने वाले इस महात्मा ने जब भी अपनी आवाज खोली तो निकले विचारों ने हर जन-मन में चेतना फूंकी। सही मायने में गांधीजी इस देश की आत्मा हैं।

चतुर्थ अध्याय नेल्सन मंडेला की विचारधाराओं का अध्ययन है।

इस अध्ययन में नेल्सन मंडेला के मौलिक विचारों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है। मंडेला पहले ऐसे नायक हैं जिनके लिए कोई चीज अछूत नहीं है। वे भले ही अछूत जन्मे लेकिन सबको अछूतपन से मुक्त बराबर करते चले गए। मंडेला पर मार्क्सवाद का प्रभाव झलकता है लेकिन उनका चरित्र मानवतावादी और धर्मनिरपेक्ष था। मंडेला पर अब्राहम लिंकन और मार्टिन लूथर किंग के मानवतावादी दृष्टिकोण की गहरी छाप थी। छात्र जीवन के अछूतपन के अनुभवों ने उन्हें संघर्ष के लिए कटिबद्ध किया।

वह मानते थे कि मनुष्य होने का जितना अधिकार गोरों को है, उतना ही काले नीग्रो लोगों को भी है। सभी मानव एक समान हैं।

मंडेला ने भिन्न-भिन्न कबीलों को एकता, ममता एवं समता के सूत्र में पिरोया। उन्होंने अफ्रीकी लोगों को शांति और सहिष्णुता की सीख दी। मंडेला को नए युग का क्रांतिकारी उदारतावादी कहना ज़्यादा समीचीन होगा। वह स्वतंत्र विचारों वाले व्यक्ति थे। उनके विचार से नरसंहार और अत्याचार द्वारा किसी भी देश को अधिक दिनों तक गुलाम बनाए नहीं रखा जा सकता है। मंडेला की गैरजातिवादी और मानवतावादी लोकतंत्र में गहरी आस्था थी। देश के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति बनकर उन्होंने सभी समुदायों को सम्मान तथा राष्ट्रीय गौरव की सुरक्षा प्रदान की। बाल अधिकार और बच्चों की शिक्षा हेतु चिल्ड्रेन फंड की स्थापना की। शिक्षा को उन्होंने राष्ट्र निर्माण हेतु एक कारगर हथियार माना। देश की आर्थिक नीति को आधार बनाते हुए उन्होंने मुक्त अर्थ व्यवस्था को स्वीकार किया। आज दक्षिण अफ्रीका का शेयर बाजार पूंजीकरण महाद्वीप का सबसे बड़ा कारोबार देने वाला देश बन गया है जिसकी नींव मंडेला द्वारा रखी गई है। मंडेला विश्व के सत्याग्रहियों के लिए उत्कृष्टतम आदर्श हैं। आतंकवाद, उग्रवाद अथवा नस्लवाद का शाश्वत विकल्प यदि आज विश्व समाज में है तो तो वह नेल्सन मंडेला का विचार दर्शन है।

पांचवां अध्याय गांधी और मंडेला की विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन है।

इस अध्याय में गांधीजी और नेल्सन मंडेला की विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन कर विश्व के इन दोनों महापुरुषों के विचारों, सिद्धांतों को एक साथ देखने की कोशिश की गई है।

भारत एवं दक्षिण अफ्रीका के सामाजिक परिवेश में काफी भिन्नताएं हैं। गांधीजी और मंडेला के द्वारा तत्कालीन सरकार के अन्यायपूर्ण और अमानवीय आचरण का विरोध किया गया था। दोनों ही रक्तहीन क्रांति के महान योद्धा रहे। इन दोनों महापुरुषों का उद्देश्य एक ही था 'देश की आज़ादी' लेकिन उनकी कल्पनाएं भिन्न थी।

गांधीजी ने कभी राजकीय सत्ता को अपने हाथ में नहीं लिया और उनकी राजनीति धार्मिकता से प्रभावित रही, वहीं मंडेला सक्रिय राजनीतिज्ञ थे। वह कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित थे लेकिन उनका व्यक्तित्व सेक्युलर और मानवतावादी रहा। गांधीजी और मंडेला अपने जीवनकाल में कभी एक दूसरे से नहीं मिले थे। दोनों ने अपने वैचारिक दृष्टिकोण से अलग-अलग पहचान बनाई। दोनों ही अपने-अपने समय के बड़े नायकों के तौर पर उभरे। गांधीजी शांति का प्रतीक बने तो मंडेला को शांति के नोबेल से सम्मानित किया गया।

साहित्य पुनरवालोकन

- **गांधी सामाजिक राजनैतिक परिवर्तन, डॉ. हरीश कुमार, 2009**

सत्याग्रह एक महान शक्ति है और जिस प्रकार प्रकाश गहरे से गहरे अंधकार का मुकाबला कर सकता है उसी तरह सत्याग्रह भी बड़ी विरोधी ताकत का मुकाबला कर सकता है। सत्याग्रह का आधार सत्य है यह ऐसा अस्त्र है जिसका प्रभावकारी प्रयोग केवल वे ही कर सकते हैं जो कभी रक्तपात पर विश्वास नहीं करते हैं। परिस्थितियों में सुधार लाने के लिए सत्याग्रह शायद संसार का सबसे शक्तिशाली शस्त्र है।

- **गांधीवादी समाजवाद, डॉ. उपेंद्र प्रसाद, 2007**

जिस देश के लोग अधभूखे हो, उसका न कोई धर्म हो सकता है, न कोई कला न कोई संगठन। ऐसा स्वराज्य व्यर्थ है जिसमें अमीरी गरीबी की खाई बनी रहे।

- **गांधी विचार दर्शन, डॉ. वीरेंद्र शर्मा, डॉ. ऋचा शर्मा, 2008**

स्वदेशी एक धार्मिक अनुशासन है, जिसे प्राप्त करने के लिए आवश्यकता पड़ने पर व्यक्ति को शारीरिक कष्टों की भी अवहेलना करनी चाहिए। उन्होंने मशीन पर आधारित औद्योगिक समाज की तीव्र आलोचना की और 'सर्वोत्तम' के विचारों तथा रचनात्मक कार्यक्रमों पर जोर दिया।

- **नेल्सन मंडेला आजादी को ओर बढ़ते कदम: आत्मकथा, 1994**

मैं जानता हूं कि एक दिन मैं फिर एक स्वतंत्र व्यक्ति बनकर धूप के घास पर टहलूंगा। मैं एक आशावादी व्यक्ति और इसलिए सदा अपना सिर सूरज की ओर उठाए रखता हूं। ऐसे अनेक क्षण आए, जब मानवता के प्रति मेरे विश्वास को परखा गया, लेकिन मैं कभी निराश नहीं हुआ, क्योंकि उस रास्ते पर हार और मौत के सिवा कुछ नहीं होता है।

- **मंडेला: ए क्रिटिकल लाइफ, टॉम लॉज, 2006**

मंडेला ने कहा था गृहयुद्ध अथवा आजादी के लिए रक्तपात जनता को मंहगा पड़ सकता है। नेल्सन की राय थी श्वेत सरकार से दक्षिण अफ्रीका के लिए आजादी मांगना भी कोई अपराध नहीं है। अपने अधिकारों की भी मांग करना कोई अपराध नहीं है।

- **गांधी दर्शन, डॉ. एम.के. मिश्रा, डॉ. कमल दाधीच, 2011**

गांधीजी के अनुसार केंद्रित उद्योग और अहिंसा परस्पर विरोधी है। वो पैमाने पर उत्पादन प्रकृति और मनुष्य का शोषण है और यह अहिंसा का सर्वथा निषेध है। घरेलू धंधों को अपनाना विश्व शांति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। बड़े पैमाने पर उत्पादन, आधुनिक अंतरराष्ट्रीय होड़, साम्राज्यवादी शोषण और युद्धों का प्रमुख कारण है।

अध्ययन का महत्व एवं प्रासंगिकता

महात्मा गांधी जी और नेल्सन मंडेला दोनों ही अहिंसावादी सत्याग्रही थे उन्होंने अपने अपने क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया। महात्मा गांधी ने भारत देश को स्वतंत्र करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और नेल्सन मंडेला ने भी अपने दश दक्षिण अफ्रीका को रंगभेद से मुक्त किया। दोनों ने अनेक को बार जेल की यात्रा की उन दोनों एक एक ही उद्देश्य था। देश की आजादी।

आज के वर्तमान जीवन में भी हमें अपने हक और अधिकार के लड़ना पड़ता है। पर वह लड़ाई अगर अहिंसा के माध्यम से हो तो शांति प्रस्थापित रहती है। आज भी अनेक कार्य हिंसा को लेकर होते हैं। दंगे, हत्या आज के समाज में आए दिन देखने को मिलते हैं। समाज में नई चेतना लाई हो और नई पीढ़ी को अगर हमें आदर्श पीढ़ी बनाना हो तो महात्मा गांधी और नेल्सन मंडेला जैसे महापुरुष का अध्ययन महत्वपूर्ण है। अहिंसा का प्रचार और प्रसार वर्तमान समाज में अतिआवश्यक है। समाज का हिंसावादी स्वरूप को कोई बदल सकता है तो वह है अहिंसा एवं शांति का मार्ग ही है।

आज के वर्तमान वैश्विक समाज में हर तरफ हिंसा, आतंकवाद, अत्याचार, शोषण, अन्याय दिखाई पड़ता है। इससे समाज में असंतोष एवं मानवता को अपरिमिती हानि प्राप्त हुई है। समाज में फैली इन कुरीतियों एवं बुराईयों की समाप्ति हेतु गांधीजी एवं नेल्सन मंडेला जैसे मानवतावादी महापुरुषों के शांति एवं अहिंसा वादी विचारों को समाज के जन मानस में प्रसारित किया जाना जरूरी हो गया है। महात्मा गांधी तथा नेल्सन मंडेला की विचारधारा से जनता में देशप्रेम, देशनिष्ठा तथा मानवता के प्रति प्रेम आदि से इस मुश्किलों से पार पाना संभव बनाया जा सकता है।

गांधीजी की सत्य, अहिंसा और शांति का संदेश देने को सफलता की ओर अग्रसर किया है तथा मानवीय संबंधों में आशातीत सुधार किया है।

वैश्विक समाज में जो लोग संघर्षों के प्रतीक, मानवतावादी और समानता के पक्षधर रहे हैं उनमें महात्मा गांधी तथा नेल्सन मंडेला का नाम अग्रणी है। मंडेला की नीतियां समता, स्वतंत्रता बंधुता यह लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था के अभिन्न अंग हैं।

अतः इस अध्ययन की प्रासंगिकता है कि विश्व में हिंसा, सांप्रदायिकता एवं अन्याय के विरोध कर शांति प्रस्थापित करना और वैश्विक भावना एवं भाईचारा को मजबूती प्रदान करना है।

शोध का उद्देश्य

महात्मा गांधी एवं नेल्सन मंडेला की विचारधारा के प्रवाह ने वैश्विक समाज से एक नई जन-चेतना का जागरण किया है। इस शोध में इसके महत्व को वर्णित एवं विश्लेषित करना ही इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

उद्देश्य

1. समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त कर समाज में जागरूकता निर्माण करना। लोगों में स्वातंत्र समता एवं बंधुता की भावना को प्रसारित करना।
2. समाज में सत्य, अहिंसा एवं शांति के महत्व को विशद करना और उसके मार्गक्रमण करना।
3. वर्तमान स्थिति में सत्याग्रह जैसे बहुमूल्य अस्त्र का महत्व और इसकी उपयुक्तता।
4. अधिकार एवं हक की लड़ाई लड़ने हेतु अहिंसा एवं सत्याग्रह एक उपयुक्त साधन है।
5. रंगभेद, नस्लभेद, अस्पृश्यता निवारण आदि सामाजिक रूढ़िवादी परंपराओं को नष्ट करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध महात्मा गांधी एवं नेल्सन मंडेला की विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन में वर्णनात्मक, विवेचनात्मक और तुलनात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का विस्तार

प्रस्तुत शोध कार्य का विस्तार मूलतः महात्मा गांधी एवं नेल्सन मंडेला की विचारधाराओं के तुलनात्मक अध्ययन है। इस अध्ययन में गांधीजी के जीवन परिचय एवं उनके विचारों को नेल्सन मंडेला के विचारों से तुलनात्मक से अध्ययन किया गया है।

तथ्य संकलन

1. प्राथमिक स्त्रोत- प्राथमिक स्त्रोत में गांधीजी एवं मंडेला की आत्मकथा एवं उन पर लिखी गई विविध किताबों का अवलोकन किया गया है।

2. द्वितीयक स्त्रोत- द्वितीय स्त्रोत के अंतर्गत विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं शोध आलेखों और शोध से मिलते-जुलते अन्य शोधों का अध्ययन कर सामग्री का संकलन किया गया है।

अध्ययन की सीमाएं

प्रस्तुत शोध कार्य महात्मा गांधी एवं मंडेला की विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन को केंद्र में रखकर किया गया है। इसमें गांधीजी एवं मंडेला के जीवन के महत्वपूर्ण घटनाओं को शामिल किया गया है तथा उनके विचारधाराओं का विश्लेषित किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध का लक्ष्य सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक तौर पर यह जानने का प्रयास है, जिससे महात्मा गांधी और नेल्सन मंडेला शांति, अहिंसा के दृष्टिकोण को चिह्नित एवं संग्रहित करके उनकी विचारधाराओं को तुलनात्मक आधार पर विश्लेषण करना है।

शोध के विषय के सैद्धांतिक पक्ष को उभारने के लिए शोध को आगमनात्मक प्रवाहों के माध्यम से संशोधित एवं व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। शोध में गांधी और मंडेला के विभिन्नताओं का अध्ययन कर तुलनात्मक आधार पर वस्तु एवं तथ्यों का वर्गीकृत किया गया है। वर्णनात्मक तथा विवेचनात्मक आधार पर गांधीजी एवं मंडेला की विचाराधारा का आख्यान तथ्यों के आधार पर किया गया है।

प्रस्तुत शोध के लिए प्राथमिक स्त्रोतों में मुख्यतः गांधीजी एवं मंडेला पर उपलब्ध विविध पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है। जिसके आधार पर उनके विचारधाराओं को तुलनात्मक व्याख्या इस शोध के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है।

शोध को संदर्भित करने हेतु द्वितीयक स्त्रोत के रूप में अन्य संबंधित पुस्तकों एवं संगणकीय सामग्री का प्रयोग किया गया है।

षष्ठम-अध्याय
उपसंहार

गांधीजी का बचपन में ऐसे वातावरण का प्रभाव था जो उनके संपूर्ण जीवन में देखने को मिलता है। उन्होंने अपनी माता से सुना था कि सत्य की हमेशा विजय होती है और अहिंसा ही परमधर्म है। गांधीजी पर हुए संस्कारों ने उनमें सत्य और अहिंसा के प्रति इतनी आस्था पैदा की कि वे अपने जीवन पर्यन्त इन्हें अपने मूल सिद्धांतों के रूप में मानते रहे।

गांधीजी का दक्षिण अफ्रीका जाना एक संयोग मात्र था। वहां वे एक साधारण व्यक्ति के रूप में गए और परिस्थितियों ने उन्हें एक महान सामाजिक कार्यकर्ता और सेवक बना दिया। गांधीजी अपने वकालत के पेशे में झूठ का सहारा नहीं लेना चाहते थे। उनका विश्वास था कि उनके व्यवसाय का आधार सत्य होना चाहिए।

दक्षिण अफ्रीका में एक मुकदमे के सिलसिले में वह सलाहकार के रूप में पहुंचे थे। वहां उन्होंने देखा कि भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। स्वयं गांधीजी को भी इन्हीं अपमानों का सामना पड़ा। गोरों द्वारा उन्हें ट्रेन से उतारा गया, प्रिटोरिया जाते समय उनको दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। जिसने गांधीजी के मन में अपमानों के प्रति संघर्ष की भावना को जन्म दिया। गांधीजी ने इस संघर्ष को जनमानस का संघर्ष बनाया और लोगों को संगठित करके उन्हें एक मंच प्रदान किया।

प्रिटोरिया में गांधीजी ने विभिन्न धर्मों का अध्ययन किया। इस अध्ययन ने उनके मन में दया, सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता जैसे विचारों को सुदृढ़ किया, जो आगे चलकर और विकसित हुए और उनके जीवन के आधार तत्व बने।

गांधीजी ने जिस मुकदमे के लिए दक्षिण अफ्रीका गए थे, उसे उन्होंने समझौते के द्वारा संपन्न करवाया। सन 1894 में गांधीजी ने भारतीयों की समस्याओं को प्लेटफार्म देने के लिए नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की। मताधिकार बिल विधेयक के विरोध का आंदोलन बढ़ता जा रहा था और गांधीजी के भारत लौटने की तिथि नज़दीक थी। ऐसी परिस्थिति में नेटाल के भारतीय व्यापारियों ने आंदोलन को गरिमा और गांधीजी के नेतृत्व को आवश्यक मानते हुए उन्हें स्थाई रूप से वहीं रह जाने के लिए अनुबंधित कर लिया। मताधिकार बिल विधेयक को

पेश न किया जाए इसके लिए स्पीकर को प्रतिवेदन दिया गया, बिल पर बहस दो दिन के लिए स्थगित कर दी गई। इससे लोगों में हिम्मत आई।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी को एक वकील के रूप में कार्य करने की मान्यता मिल गई। साथ ही भारतीय व्यापारियों ने उन्हें अपने वकील के रूप में कार्य करने हेतु एक वर्ष की अग्रिम राशि भी दे दी। बोअर युद्ध में गांधीजी ने घायलों की सहायता के लिए विभिन्न दल बनाए, जो घायलों की सेवा करते थे। बोअर युद्ध में भारतीयों ने ब्रिटिशों की जो सहायता की, उससे भारतीयों को लगा कि उनकी दशा सुधरेगी। लेकिन भारतीयों का शोषण और अधिक होता गया।

गांधीजी ने एशियाटिक रजिस्ट्रेशन एक्ट का विरोध करने के लिए पैसिव रेजीस्टेंस एसोसिएशन बनाई। गांधीजी ने इस संपर्क नीति को सत्याग्रह का नाम दिया। सरकार ने भी अपना दमनचक्र चलाया और बड़ी संख्या में लोगों को जेल में डाल दिया गया।

सरकार को चारों ओर से विरोध का सामना करना पड़ रहा था। सरकार पर विश्व जनमत का भी प्रभाव था। जिसके परिणामस्वरूप सन 1914 को भारतीय कष्ट निवारक बिल पास हो गया, जिससे सभी अन्यायपूर्ण कायदों को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार भारतीयों का एक लंबा संघर्ष समाप्त हुआ। दक्षिण अफ्रीका के अनुभवों को लेकर गांधीजी एक पूर्ण सामाजिक कार्यकर्ता और जन नेता बनकर भारत की भूमि पर लौटे।

गांधीजी ने जीवन भर सत्य और अहिंसा को अपने मूल मंत्र के रूप में विकसित किया। सत्य को सच बोलने तक तथा अहिंसा की किसी दूसरे को न मारने तक ही सीमित नहीं किया बल्कि इन दोनों शब्दों को व्यापक रूप में स्वीकार किया।

गांधीजी ने अंतरात्मा को आवाज को सत्य कहा, लेकिन सत्य के साथ जोड़ा और कहा कि सत्य ही ईश्वर है। गांधीजी ने माना कि सत्य हमारे जीवन का प्राण तत्व है, सत्य के बिना जीवन में किसी सिद्धांत या नियम का पालन करना कठिनतम कार्य है। सत्य हमेशा हितकारी होता है। उनका विचार है कि संपूर्ण सत्य का पालन राजनीति, अर्थनीति, परिवार, राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय मामलों में भी होना चाहिए।

गांधीजी ने सत्य को स्थापित करने में अहिंसा को एक साधन के रूप में स्वीकार किया। सत्य और अहिंसा ऐसे अस्त्र हैं, जिसके द्वारा संसार को झुकाया जा सकता है। विरोधों को अपने प्रति सद्भावना रखने के लिए मजबूर

किया जा सकता है। अहिंसा की शब्दावली में कोई दुश्मन नहीं है, अहिंसा एक अमोध हथिहार है, जिसका मुकाबला दुनिया की कोई शक्ति नहीं कर सकती।

गांधीजी ने अहिंसा के बल पर भारत को स्वतंत्रता दिलाई। गांधीजी की अहिंसा देश को सजग नेतृत्व देने में सफल रही। अतः यह कह सकते हैं कि अहिंसा के प्रति आस्था का उदय ईश्वरीय प्रेम से हो सकता है और गांधीजी इसी को ईश्वर मानते थे उनके लिए सत्य ही ईश्वर था, जो एक अमूल्य खज़ाना था।

गांधीजी ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू में स्थित अन्याय और अत्याचार को मिटाने के लिए 'शांतिपूर्ण विरोध की नीति' सत्याग्रह का समर्थन किया। गांधीजी ने सत्याग्रह का प्रयोग न केवल भारतीय स्वतंत्रता के लिए किया बल्कि समाज में फैली कुरीतियों जैसे जाति प्रथा, अस्पृश्यता आदि के लिए भी किया। वर्तमान समय में तरह-तरह के सत्याग्रह चल पड़े और यह अधिकतर राजनीति के क्षेत्र में चल रहे हैं, जहां सत्य के बदले सत्ता का आग्रह ही ज़्यादा प्रकट होता है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि सत्याग्रह संघर्ष की वह विधि है, जिसकी सफलता इसके प्रयोग करने वाले पर निर्भर करती है। यदि वह ईमानदारी और उचित उद्देश्यों को लेकर संघर्ष करता है, तो उसकी विजय निश्चित है।

गांधी जी का ईश्वर भक्ति में विश्वास था। गांधीजी ने कहा कि संसार कि सबसे बड़ी शक्ति आत्मा की है। उन्होंने मानव होने का लक्ष्य, ईश्वर को प्राप्त करना बताया।

गांधीजी वर्णव्यवस्था को संकीर्ण रूप में स्वीकार नहीं करते। गांधीजी ने पतित जाति व्यवस्था पर आधारित छुआछूत को अमानवीय माना, इसे उन्होंने असत्य व अन्याय पर आधारित बताया। गांधीजी ने जाति व्यवस्था के स्थान पर वर्ण व्यवस्था के मौलिक रूप को स्वीकार किया। उन्होंने हरिजन सेवक संघ की स्थापना की, जिससे हरिजनों के साथ किए जाने वाली छुआछूत को समाप्त किया जाए और वह राष्ट्रीय धारा में शामिल हो सके।

गांधीजी ने चंपारन और खेड़ा के किसानों के कष्ट निवारण के लिए सीमित दायरे में सत्याग्रह का प्रयोग किया। किंतु ब्रिटेन के रौलेट एक्ट ओर जलियावाला बाग हत्याकांड के बाद सारा देश मर्महित निस्तब्ध और किंकर्तव्यविमूढ़ था। गांधी ने पंजाब के शोकग्रस्त देशवासियों के आंसू पोंछने के का बीड़ा उठाया। सन 1920 के प्रारंभ में अहिंसात्मक असहयोग का प्रस्ताव देश के सामने रखा। असेंबली और कौसिलों और विदेशी वस्त्रों का

बहिष्कार किया गया। देश में खादी और ग्रामोद्योग, राष्ट्रीय शिक्षा, मद्य निषेध, सांप्रदायिक एकता और अस्पृश्यता निवारण का रचनात्मक कार्यक्रम की शुरूआत हुई।

सन 1920 से सन 1947 तक भारतवासी ने गांधीजी के नेतृत्व में अहिंसात्मक लड़ाई लड़ी। हजारों ने बलिदेवी पर हंसते हुए अपने प्राण विसर्जित किए। सविनय अवज्ञा, लगानबंदी, सत्याग्रह और भारत छोड़ों सत्याग्रह ने देश के साहस को ऊंचा उठाया और अंत में दिनांक 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। ब्रिटिश कूटनीति ने धार्मिक भावनाओं को उभारने के लिए एक ओर जमाते इस्लाम तो दूसरी ओर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को खड़ा किया गया। गांधीजी ने अपनी संपूर्ण शक्ति के साथ देश का विभाजन रोकने का प्रयास किया। लेकिन हिंदुस्तान और पाकिस्तान विभाजन के बाद सांप्रदायिकता की बलिवेदी पर चढ़ गया। इस बटवारे का समापन महात्मा गांधी के बलिदान से हुआ।

गांधीजी ने जिस व्यवस्था की कल्पना की वह व्यवस्था नैतिक और अहिंसक लोकतंत्र का आधार थी, जिसमें राज्य को संपूर्ण सत्ता को ग्राम पंचायतों और दूसरी स्वायत्त संस्थाओं में विकेंद्रित कर देना था। गांधीजी का सामाजिक आदर्श है, वह वर्गहीन राज्यहीन समाज जिसमें सामाजिक एकता की रक्षा आंतरिक साधनों और हिंसक प्रयोग के अतिरिक्त अन्य बाह्य साधनों द्वारा होगी। उन्होंने रामराज्य की कल्पना की थी। राजनीतिक भाषा में वह संपूर्ण जनतंत्र है, उसमें सघनता और निर्धनता, वर्ण, जाति, धर्म, लिंग आदि संबंधी सभी विषमताएं नहीं होगी। ऐसे राज्य की बुनियाद सत्य और अहिंसा होंगे और उसमें सुख-समृद्ध और स्वावलंबी गांव और ग्राम पंचायतें होंगी।

गांधी का खादी और ग्राम उद्योगों का कार्यक्रम सैद्धांतिक चीज नहीं थी। वह पूर्णतः एक व्यावहारिक योजना थी। जिसमें बेरोज़गारी की यों ही बर्बाद होने वाली शक्ति का सदुपयोग करने की योजना थी। गांधीजी ने छोटे-छोटे उद्योग और कारखानों को ग्रामों के विकास के लिए अधिक लाभप्रद माना और हाथ से परिश्रम करने पर बल दिया ताकि वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार सके।

इस प्रकार गांधी जी ने एक ऐसे भारत की रूप रेखा खींची, जो आत्मनिर्भर होगा, ग्राम एक मज़बूत स्थिति में होगा। लेकिन आज़ादी के पश्चात गांधजी के आदर्श को नहीं अपनाया जा सका। यदि गांधीजी के आदर्श को अपनाया जाता, तो एक सुदृढ़ भारत का निर्माण हो सकता है।

मंडेला ने जीवन के कठिनाइयों से निपटने की प्रेरणा अपनी मां से प्राप्त की। उनके छात्र जीवन ने लिंकन और मार्टिन लूथर किंग के मानवतावादी दृष्टिकोण का गहरा प्रभाव रहा और इनकी विचारधाराओं को उन्होंने मूर्त रूप दिया। प्रारंभ में मंडेला मार्क्सवाद की तरफ आकृष्ट हुए थे, अश्वेत होने के कारण मिली प्रताड़ना से वे उद्वेलित हुए, जिसके कारण उन्होंने श्वेत सरकार के खिलाफ़ क्रांतिकारी विद्रोह शुरू किया। मंडेला का अफ्रीका के नीग्रो लोगों का दर्द नहीं देखा जाता, वह स्वयं इसके शिकार थे। जातिवादी, नस्लभेदी कानूनों द्वारा उनके जीवन का परिसीमन किया गया था। इसके विरोध हेतु उन्होंने वाल्टर सिसलु के साथ मिलकर अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस यूथ लीग का गठन किया।

दक्षिण अफ्रीका के समाज में जनजातीय चेतना और क्रांतिकारी चेतनाओं का सीधे शोषक वर्गों के साथ टकराव था। कम्युनिस्ट और नेशनल कांग्रेस के बीच में स्वाधीनता संघर्ष के दौरान जिस तरह की घनिष्ठता थी, उसमें नए शासन को कम्युनिस्टों से पृथक करके रखना संभव नहीं था।

मंडेला को नए युग का क्रांतिकारी उदारतावादी कहना ज़्यादा समीचीन होगा। मंडेला ने भिन्न-भिन्न कबीलों की एकता, ममता और समता के सूत्र में बांधा। उन्होंने देश की आज़ादी एवं उनके अधिकारों की रक्षा हेतु संघर्ष किया। सन 1949 में मंडेला ने अपने आंदोलन को उग्र रूप प्रदान करने हेतु हड़ताल, अवज्ञा, बहिष्कार जैसे हथियारों का प्रयोग किया, जिससे सरकार पर दबाव बनाया जाए और दमनकारी कानून को वापस लिया जाए।

नेल्सन मंडेला ने अपने जीवन के 27 वर्ष जेल में बिताए थे। उनका संघर्ष अहिंसक और सत्याधारित आज़ादी के लिए था। किसी को अनुमान नहीं था कि दक्षिण अफ्रीका के गांव की झोपड़ियों में रहने वाला एक युवक 27 वर्ष की जेल को यातनाओं में तपकर दक्षिण अफ्रीका में श्वेत सरकार के लड़ने के सारे हथियार को निरर्थक कर देगा और उनकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा। मंडेला सही मायने में मानव मुक्ति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए एक कार्यशाला बने।

दक्षिण अफ्रीका के स्वतंत्रता के बाद मंडेला सरकार को प्रथम लक्ष्य का नस्लभेदीय राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं को नष्ट करना तथा सभी समुदायों को सम्मान एवं राष्ट्रीय गौरव की सुरक्षा प्रदान करना। भले ही मंडेला कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित थे, लेकिन उनका व्यक्तित्व सेक्युलर था। उनका गैर जातिवादी समाज और लोकतंत्र में विश्वास था।

मंडेला एक मज़ाकिया किस्म के हंसमुख व्यक्ति थे। उनको कपड़ों से बड़ा लगाव था। वह रेगिस्तान में पैदा एक पौधा थे, जो अन्याय और अत्याचार की गर्मी में तपकर नियती पुरुष थे। उनकी दक्षिण अफ्रीका की आज़ादी के लिए अटूट और अचल निष्ठा और श्रद्धा ही जैसे उनकी पोशाख थी।

मंडेला का सपना था कि जातियों में बंटे अफ्रीकी समाज अपनी जाति को भूलकर यह मान लें कि वह सिर्फ एक अफ्रीकी है। वह लोगों के राष्ट्रभक्ति और देशभक्ति की प्रेरणा को जागृत करना चाहते थे।

राष्ट्रपति बनने के बाद नेल्सन मंडेला ने देश की मज़बूत अर्थव्यवस्था देने हेतु मुक्त अर्थव्यवस्था को चुना तथा गरीबी, भूखमरी, बालविकास और शिक्षा को केंद्र में रखा। सन 1995 में उन्होंने बाल शिक्षा को लेकर चिल्ड्रेन फंड की स्थापना भी की।

रौबिन आइसलैंड जेल जीवन में उनका कैदी नं 46664 था, जो आज भी दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों में धड़क रहा है। सन 2002 में 46664 नामक संगठन एड्स और एचआईवी के प्रति युवाओं में जागरूकता फैलाने में कार्य कर रहा है। कपड़ा उद्योग में प्राण फूंकने हेतु नए लेबल का आकार दिया गया, इसे 46664 एप्रिऐल के नाम से मंडेला को समर्पित किया गया।

मंडेला ने अफ्रीका की अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान की और देश में शांति और स्थिरता प्रदान की। उन्होंने लोकतांत्रिक और स्वतंत्र समाज की कल्पना की, जहां सभी लोग शांति से मिलजुलकर रहे और सबको समान अवसर प्राप्त हों।

मानव समाज के लिए मंडेला एक विश्व स्तरीय पहचान बन गए हैं। उन्हें शांति के लिए **'नोबेल पुरस्कार'** से सम्मानित किया। वह विकास और शांति को अलग-अलग नहीं करते हैं। अपितु उनकी दृष्टि में विकास के द्वारा ही शांति प्रस्थापित की जा सकती है। उन्होंने शिक्षा दीक्षा पर बल दिया। शिक्षित व्यक्ति को सहजता से गुलाम नहीं बनाया जा सकता है। शिक्षा वह शक्तिशाली हथियार है, जिससे दुनिया को बदला जा सकता है। वह शिक्षा को उन्नति का बड़ा साधन मानते हैं।

मंडेला और गांधीजी दुनिया के उन महानायकों में से हैं, जिन्होंने विश्व में शांति और समानता प्रस्थापित करते हेतु महान संघर्ष किया। विश्व समाज में जिन लोगों को संघर्षों के प्रतीक और मानवतावादी माना गया है। उनमें इन दोनों महानतम पुरुषों का नाम अग्रणी है। भारत और दक्षिण अफ्रीका के सामाजिक परिवेश और सामाजिक आवश्यकताओं में काफी भिन्नता है। मंडेला और गांधीजी इन दोनों का ध्येय एक ही था देश की

आज़ादी, लेकिन कल्पनाएं भिन्न थी। गांधीजी सीधे तौर पर राजनीति से नहीं जुड़े। तथा राष्ट्रपिता का सम्मान प्राप्त कर सके, वहीं दूसरी ओर नेल्सन मंडेला एक सक्रिय राजनीतिज्ञ के रूप में अपना कार्य करते रहे और अंत में उच्च राजनीतिक पद पर सुशोभित हुए।

गांधीजी की राजनीति धार्मिकता से प्रभावित रही और मंडेला कम्युनिस्ट विचारधाराओं से प्रभावित थे, लेकिन उनका व्यक्तित्व धर्मनिरपेक्ष रहा। दोनों ने वकालत की प्रैक्टिस दक्षिण अफ्रीका से शुरू हुई। दोनों ही रक्तहीन क्रांति के महान योद्धा हैं। यदि गांधी जी की दिशा एक रेलयात्रा के कारण तय हुई तो दूसरी ओर मंडेला की दिशा कॉलेज में मिले अमानवीय व्यवहार से। गांधीजी ने किसी भी कीमत पर सत्य और अहिंसा की कुर्बानी न देने की बात की, वहीं मंडेला ने सत्याग्रह द्वारा आज़ादी प्राप्त करना असंभव हो तो सशर्त संघर्ष को समर्थन करते हैं।

गांधीजी का अहिंसा में पूर्ण विश्वास रहा, वहीं मंडेला ने समय के साथ अपने आपको परिवर्तित किया।

इन महान विभूतियों ने लोगों को देशप्रेम और मानवता के प्रति प्रभावित किया और शांतिदूत बनकर विश्व में प्रसिद्ध हुए।